दृष्टि
The Vision

# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

## टेस्ट-V ( प्रश्नपत्र-1 )

DTVF/18(JS)–HL-**HL5**

*निर्धारित समय: तीन घंटे*
***Time allowed: Three Hours***

*अधिकतम अंक: 250*
***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 31/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

| 1 | 1 | 1 | 3 | 4 | 4 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): DPmeena

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Reviewer (Code & Signatures)*

## मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

### परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

| उत्तर का स्तर (Standards of Answer) | सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.) | वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay) |
|---|---|---|
| उत्कृष्ट (Excellent) | 51-60% | 61-70% |
| बहुत अच्छा (Very Good) | 41-50% | 51-60% |
| अच्छा (Good) | 31-40% | 41-50% |
| औसत (Average) | 21-30% | 31-40% |
| कमज़ोर (Poor) | 0-20% | 0-30% |

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

## Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

### Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

## Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिंदी

हिन्दी के आधुनिकीकरण के प्रयासों में यूनीकोड की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यूनीकोड के आगमन से पूर्व हिन्दी इन्टरनेट पर उपेक्षित थी किन्तु इसके प्रभाव से अब हिन्दी का दायरा बढ़ रहा है।

वस्तुत: यूनीकोड एक टाइपिंग सॉफ्टवेयर है जिसमें 2 एक बाइट सोलह बिट से मिलकर बनी होती है, जिससे ASCII की तुलना में यह अधिक भाषाओं के संकेतों को धारण करती है।

यूनीकोड के आगमन के बाद की-बोर्ड लेआउट में फॉन्टस की विविधता के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएं समाप्त हो गई है।

वर्तमान में हिन्दी इंटरनेट पर उसी तरह से प्रभावशाली होती जा रही है, जितनी अन्य भाषाएं हैं क्योंकि यूनीकोड के माध्यम से रोमन लिपि में लिखे शब्दों का देवनागरी में परिवर्तन आसानी से संभव है।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उदाहरण के लिए 'सरल' लिखने के लिए Saral को रोमन लिपि में लिखने पर यह देवनागरी में परिवर्तित हो जायेगा।

हिन्दी के विकास में देखा यूनीकोड की इसी महत्ता को देखते हुये एक कवि ने यूनीकोड पर कविता की भी रचना की है। जिसके माध्यम से उसने यूनीकोड के ~~सबके बारे उसकी भावा~~ महत्व को दर्शाया है।

यूनीकोड के आगमन से हिन्दी के इंटरनेट पर प्रसार में वृद्धि हुई है। वर्तमान में कई वेबसाइट जैसे- हिन्दी समय (hindisamay.com), वेब दुनिया (webduniya.com) आदि का विकास यूनीकोड की ही देन है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान

देवनागरी लिपि के मानकीकरण के अनेक व्यक्तिगत प्रयासों के पश्चात् काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने एक समिति का गठन कर इसके मानकीकरण में योगदान दिया।

वस्तुतः काका कालेलकर की अध्यक्षता में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'नागरी लिपि सुधार समिति' का गठन किया। इस समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिये -

- वर्णों की समरूपता से भ्रमित होने से बचने के लिए 'भ' तथा 'ध' में गुजराती घुण्डी का प्रयोग किया जाये।
- शिरोरेखा द्वारा समय की बर्बादी को रोकने के लिए लेखन में शिरोरेखा का प्रयोग न करें किन्तु टंकण में प्रयोग यथावत् रहे।
- सावरकर बंधुओं द्वारा सुझाई गई 'अ' की बाएंघुमी को स्वीकार कर लिया जाना चाहिए।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्ण संयोग में एकरूपता लाने का प्रयास किया जाये अर्थात् 'द्‌य' को द्य के रूप में लिखने की बजाय 'द्‌य' के रूप में ही प्रयुक्त किया जाये।

- सभी वर्णों को सुधारकर खड़ी पाई युक्त किया जाये अर्थात् 'ट','ठ' जैसे वर्ण जो खड़ी पाई युक्त नहीं हैं उनमें पर्याप्त सुधार किये जाये।

- प्रत्येक वर्ण के दो रूप होने चाहिए, जो स्वर बिना स्वर तथा स्वर सहित उपयोग के लिए निर्धारित हो। जैसे - 'क' - स्वर सहित
क - बिना स्वर

इस प्रकार नागरी लिपि सुधार समिति ने हिन्दी के मानकीकरण में नवीन सुझावों का समावेश किया।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी की लिंग-व्यवस्था की समस्याएँ

हिन्दी में अपनी ~~मा~~ जननी संस्कृत के तीन लिंगों की बजाय केवल दो ही लिंगों को स्वीकार किया है। इसलिए कभी-कभी हिन्दी में लिंग व्यवस्था में कुछ जटिलताएं उत्पन्न होती है-

- सबसे बड़ी समस्या लिंग निरपेक्ष वस्तुओं अर्थात् संस्कृत के नपुंसक लिंगों के लिंग निर्धारण में होती है। उदाहरण के लिए त्रिणी को स्त्रीलिंग माना जाता है जबकि टमाटर को पुलिंग।

- दूसरी समस्या अन्य भाषाओं (देशज अथवा विदेशज) के शब्दों के लिंग निर्धारण में होती है। उदाहरण के लिए वायु, आत्मा, पाठशाला जैसे शब्द अपनी मूल भाषा में ~~स्त्रीलिंग~~ है ~~जब~~ पुलिंग है जबकि हिन्दी में स्त्रीलिंग

- लिंग व्यवस्था की एक समस्या पदनाम के संदर्भ में भी उपस्थित होती है। कुछ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पदनाम जैसे - प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति के स्त्रीलिंग अतार्किक है।

- हिन्दी की एक बोली मैथिली में स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में भेद नहीं होता जो कि कभी-कभी समस्या के रूप में उपस्थित होता है।

- हिन्दी में लिंग में परिवर्तन के साथ विशेषण में भी परिवर्तन हो जाता है। जो इसे असमानता प्रदान करता है।

जैसे → लंबा लड़का
→ लंबी लड़की



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

(घ) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था

वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है, विशेषण कहलाते है।

हिन्दी में चार प्रकार के विशेषण माने गये है -

① गुणवाचक विशेषण - वे विशेषण जो किसी संज्ञा की विशेषता बताते है अर्थात् उसके गुण, ऐब आदि को निरूपित करते है।
उदाहरण - काला, पीला, लंबा, नीचा आदि

② सार्वनामिक विशेषण - वे ~~सर्वनाम~~ विशेषण जो अपने सार्वनामिक रूप में ही किसी संज्ञा की विशेषता बताये। सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।
उदाहरण - कितने लंबे हो तुम ?

③ परिमाणबोधक विशेषण - किसी संज्ञा की मात्रा को निर्धारित करने वाला सर्वनाम। विशेषण द्रव्यवाचक संज्ञा के संदर्भ में।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण - चार लीटर पानी।

संख्यावाची विशेषण - किसी जातिवाचक संज्ञा के संदर्भ में उसकी विशेषता प्रकट करने वाला विशेषण।

उदाहरण - आठ सौ छात्र।

उपर्युक्त चारों विशेषणों में प्रथम दो विकारी तथा अंतिम दो अविकारी है अर्थात गुणवाचक तथा सार्वनामिक विशेषण संज्ञा के लिंग, वचन के साथ परिवर्तित हो जाते है जबकि अंतिम दो नहीं।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

किसी भाषा के आधुनिकीकरण का संबंध उसके वैज्ञानिक- तकनीकी विकास से है। तकनीकी विकास का एक संबंध कम्प्यूटरीकरण से है।

वस्तुत: कम्प्यूटर पर कार्य करने के लिए हिन्दी भाषा को प्रयोग करना, हिन्दी का कम्प्यूटरीकरण है। कम्प्यूटरीकरण के दो आयाम है - (अ) सिस्टम साफ्टवेयर
(ब) एप्लीकेशन साफ्टवेयर

हिन्दी के कम्प्यूटरीकरण का संबंध सिर्फ एप्लीकेशन साफ्टवेयर से है जिसमें वर्ड प्रोसेसिंग का कार्य वर्तमान में हिन्दी में किया जाता है।

हिन्दी के कम्प्यूटरीकरण के प्रयासों में सी-डेक पुणे द्वारा GIST नामक कम्प्यूटर कार्ड का विकास है। इस कार्ड को कम्प्यूटर में लगाने पर उसमें हिन्दी तथा अन्य भारतीय



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषाओं में कार्य किया जा सकता है।

उसके पश्चात् शिक्षण तथा अनुवाद जैसे साफ्टवेयर का विकास किया गया जिससे कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग थोड़ा आसान हुआ।

हाल ही में मीता नामक साफ्टवेयर का विकास किया गया है किन्तु अभी-भी हिन्दी के कम्प्यूटरीकरण के लिए अनेक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है जिनमें स्कैन टू टैक्स्ट तथा 'स्पैल चेक' एक अनिवार्यता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

कारक व्यवस्था का संबंध उस व्यवस्था से है, जिसके तहत कोई संज्ञा या सर्वनाम पद वाक्य में अपना स्थान ग्रहण करते है।

हिन्दी में संस्कृत की भांति आठ कारक स्वीकार किये गये है किन्तु हिन्दी के कारक विभक्ति आधारित न होकर व परसर्गों पर आधारित है।

हिन्दी के कारक तथा प्रयुक्त परसर्ग

① कर्त्ता - ने ② कर्म - को
③ करण - से ④ सम्प्रदान - के लिए
⑤ अपादान - से (वियोज्य) ⑥ संबंध - का, के, की
⑦ अधिकरण - में, पर ⑧ संबोधन - हे, ओ, अरे

① कर्त्ता कारक : कर्ता वह संज्ञा पद है जो किसी क्रिया को करता है अर्थात् जो किसी कार्य को सम्पन्न करता है इसके लिए साधारणतः 'ने' परसर्ग प्रयुक्त होता है किन्तु कभी-कभी


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसका प्रयोग बिना परसर्ग के भी होता है।

उदाहरण - राम ने रावण को मारा।

② कर्म कारक - कर्म वह संज्ञा या सर्वनाम पद है, जिसके प्रति कार्य सम्पन्न होता है अथवा क्रिया की जाती है।

उदाहरण - राम ने रावण को मारा।

③ करण कारक - करण वह संज्ञा या सर्वनाम पद है जो क्रिया में साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके लिए से परसर्ग प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - राम ने रावण को तीर से मारा।

④ सम्प्रदान कारक :- वह संज्ञा या सर्वनाम पद जिस उद्देश्य के लिए क्रिया की जाती है, वह सम्प्रदान कारक है।

उदाहरण - राम ने रावण को सीता के लिए मारा।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) अपादान कारक - वह संज्ञा या सर्वनाम पद जो आरंभ में क्रिया का आधार होता है किन्तु बाद में उससे अलग हो जाता है।

उदाहरण - पेड़ से पत्ता गिरता है।

(6) संबंध कारक - संबंध कारक वह संज्ञा या सर्वनाम पद जिसका संबंध क्रिया तथा अन्य कारकों से होता है। इसके लिए का, के, की परसर्ग प्रयुक्त होते हैं। यह ~~परसर्ग~~ कारक सामान्य अविकारी होता है।

उदाहरण - राम का भाई भरत है।

(7) अधिकरण कारक :- वह कारक जो संज्ञा या सर्वनाम की भौगोलिक, सामाजिक या कालिक स्थिति बताता है।

उदाहरण - उसका घर मुम्बई में है

(8) संबोधन कारक - यह कारक वाक्य के आरंभ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में प्रयुक्त होता है तथा संज्ञा या सर्वनाम को निर्देश देने, ध्यान आकृष्ट करने के लिए प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - अरे सीता! तुम आ गई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी की परसर्ग आधारित कारक व्यवस्था इसकी अपनी विशेषता है जो इसे संस्कृत से विशिष्ट बनाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

वे पद जो किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा जाति को संबोधित करते हैं, संज्ञा कहलाते हैं।

हिन्दी में मुख्यतः संज्ञा के तीन भेद माने गये हैं तथा दो उपभेद हैं।

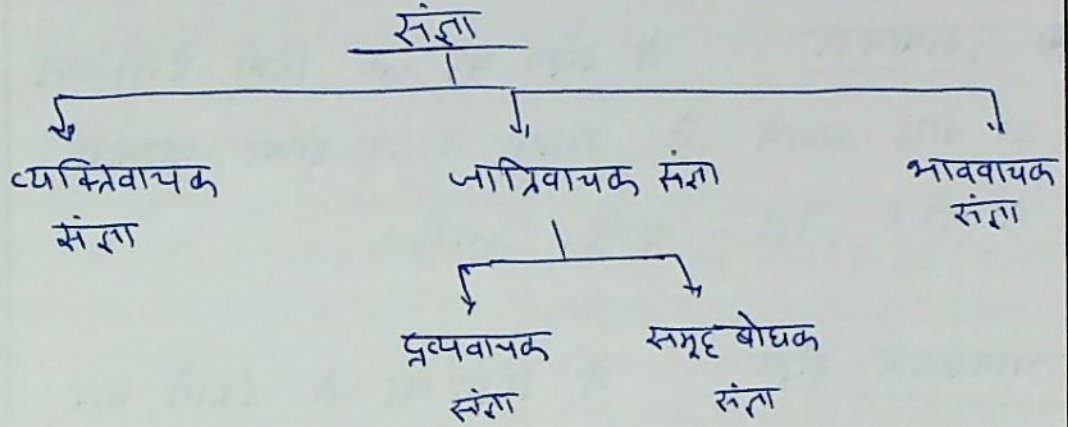


(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा - वह संज्ञा जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के बारे में बतायें, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाती है।
जैसे- राम, मुम्बई, बोतल आदि।

(2) जातिवाचक संज्ञा - वह संज्ञा जो किसी बड़े समुह तथा परिमाण को संदर्भित करे, उसका


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संबंध जातिवाचक संज्ञा से है।

उदाहरण - भीड़, दर्जन, सैनिक आदि।

इसके दो उपभेद स्वीकृत हैं-

(a) समूहवाचक - वे संज्ञा पद जो किसी समूह का बोध कराये। जैसे- सेना, विद्यार्थी आदि।

(b) द्रव्यवाचक - वे संज्ञा पद जो किसी ऐसी वस्तु का बोध कराये जो संख्या में न होकर परिमाण में हो। जैसे - पानी, आदि।

(3) भाववाचक संज्ञा - वे संज्ञा पद जो किसी भाव को निरूपित करें। जैसे - बुढ़ापा, कठोरता, खुशी, हँसना आदि।

इस प्रकार उक्त वर्गीकरण संज्ञा की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करता है किन्तु कभी-कभी कुछ शब्द विशिष्ट प्रयोजन में प्रयुक्त होने के कारण 4 अन्य संज्ञा को भी निरूपित कर सकते हैं।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे - वह वर्तमान का जयचन्द है।

यहाँ जयचन्द एक व्यक्तिवाचक संज्ञा न होकर जातिवाचक संज्ञा को निरूपित करता है क्योंकि यहाँ जयचन्द नाम न होकर एक उपाधि की भाँति है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी में वैज्ञानिक-लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में विज्ञान लेखन की परम्परा लगभग दो सौ वर्ष पुरानी है। चूंकि किसी भाषा के विकास का एक पक्ष उसका वैज्ञानिक लेखन से भी संबंधित है।

हिन्दी के पाठकों को वैज्ञानिक चेतना से जोड़ने तथा उनमें वैज्ञानिक विचारधारा का विकास करना आवश्यक है। यह हमारे संविधान में प्रत्येक व्यक्ति का मूल कर्त्तव्य भी है।

इसी कर्त्तव्य को निभाते हुये गुणाकर मुले ने हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा दिया। उनका उद्देश्य था कि हिन्दी पाठकों के मध्य वैज्ञानिक चेतना का प्रसार हो ताकि राष्ट्र के विकास तथा सामाजिक ~~बुराईयों~~ कुरीतियों के विनाश में हिन्दी पाठकों की भूमिका सुनिश्चित की जा सके।

उन्होंने विज्ञान के सभी क्षेत्रों चाहे वे


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

जीव विज्ञान के विषय हो अथवा अंतरिक्ष विज्ञान के अथवा ~~के~~ नाभिकीय शास्त्र सभी को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया।

विज्ञान लेखन में ~~उ~~ उनका योगदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने विज्ञान के जटिल सिद्धांतों की सरल व्याख्या द्वारा उन्हे रुचिपूर्ण तो बनाया ही तथा विद्यार्थियों में लोकप्रिया भी बढ़ाई।

उन्होंने विज्ञान के जटिल सिद्धातों जैसे - 'आपेक्षिकता का सिद्धांत' आदि को बड़े ही सहज एवं सरल रूप में अपनी पुस्तकों 'अल्बर्ट आइन्सटीन' तथा आपेक्षिकता सिद्धांत क्या है? में प्रकट किया है।

ब्रह्माण्ड के जटिल रहस्य जो अब तक हिन्दी पाठकों से दूर थे उन्होंने उन रहस्यों को सुरुचिपूर्ण ढंग से अपनी पुस्तकों 'ब्रह्माण्ड के रहस्य' 'नक्षत्र' 'सूर्य' आदि पुस्तकों


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में सम्मिलित किया है।

उन्होंने विज्ञान लेखन को कम्प्यूटर जैसी तकनीक से भी जोड़ा तथा कम्प्यूटर क्या है? कैसी होगी 21वीं सदी? जैसी पुस्तकों में तकनीकी ज्ञान का समावेश किया।

उन्होंने भारतीय प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को भी अपनी पुस्तकों में सम्मिलित करते हुये राष्ट्रीय जागरूकता को भी सुदृढ़ किया। 'आर्यभट्ट', 'वराहमिहिर' जैसी पुस्तकें उनकी भारतीय ज्ञान विज्ञान की समझ को दर्शाती है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि ज. गुणाकर मुले' ने हिन्दी विज्ञान लेखन के शिखर है उनकी यह विशिष्टता हिन्दी पाठकों को तथा हिन्दी को अविस्मरणीय रहेगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि की उन विशेषताओं पर प्रकाश डालिये, जिनके कारण यह एक वैज्ञानिक लिपि मानी जा सकती है। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

किसी भी लिपि को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की लिपि अथवा अखिल राष्ट्रीय क्षेत्र में विस्तृत करने के लिए उसका मानकीकरण होना अवश्यक है।

वस्तुतः किसी लिपि के मानकीकरण का आधार उसकी वैज्ञानिकता ही है। कोई लिपि जितनी अधिक मानक होगी वह उतनी ही वैज्ञानिक लिपि होगी।

देवनागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में सम्मिलित है। इसकी निम्न विशेषताएँ इसे वैज्ञानिकता प्रदान करती है-

- हिन्दी के वर्ण संस्कृत की भाँति एक स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों के समुच्चय के रूप में व्यवस्थित है। जैसे -

कंठ से उच्चरित - क, ख, ग, घ

तालु से उच्चरित - च, छ, ज, झ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के स्वर एक ही स्थान पर व्यवस्थित है क्योंकि स्वरों के उच्चारण में कंठ का उपयोग होता है जबकि रोमन लिपि में स्वरों के स्थान में बिखराव है।

- हिन्दी के लिखित तथा उच्चरित शब्दों में कोई भेद नहीं होता जो कि इसकी वैज्ञानिकता का प्रमाण है जबकि रोमन लिपि में उच्चारण में भिन्नता होती है।

  जैसे - Foot - फुट (उ)
  Put - पुट (उ)

- देवनागरी की मात्रा व्यवस्था इसकी एक और विशेषता है, जो इसे संक्षिप्तता प्रदान करती है। 'अ' स्वर के अतिरिक्त अन्य स्वरों को मात्रा के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है, जो रोमन लिपि में स्वरों के द्वारा ही उच्चरित होती है।

  जैसे - ~~see~~
  AMERICA - अमेरिका



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि की शिरोरेखा भी इसकी एक ~~वैs~~ वैज्ञानिक विशेषता मानी जा सकती है क्योंकि इससे शब्दों का सही उच्चारण संभव है।

जैसे → कपड़ा सूख रहा है।

~~बिना शिरोरेखा~~ - ~~कपडा सूख रहा है।~~

- देवनागरी लिपि को सीखना तथा उपयोग में लाना भी सरल है। केवल '।' ';' '-' तथा अर्द्धवृत्त (◡) का उपयोग करना होता है।

- देवनागरी के वर्ण भी आकर्षक तथा वर्तमान टंकण के अनुकूल है।

- देवनागरी लिपि आधुनिक सभी लिपियों की ध्वनियों को स्वीकार कर चुकी है, जिससे कोई उच्चारण संबंधी समस्या नहीं है। जैसे-

रोमन से - ऑ ⇒ डॉक्टर

फारसी से - ज़, फ़, क़ ⇒ ज़रा



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि की कई विशेषताएँ इसे वैज्ञानिकता प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानक स्वरूप के विकास में किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के मानकीकरण के व्यक्तिगत प्रयासों में किशोरीदास वाजपेयी की भूमिका अहम है। उनका योगदान हिन्दी के व्याकरण के विकास में है।

वस्तुतः कामताप्रसाद गुरु द्वारा निर्मित हिन्दी व्याकरण में विद्यमान समस्याओं के निवारण के लिए नागरी प्रचारिणी सभा ने किशोरीदास वाजपेयी को नियुक्त किया।

किशोरीदास वाजपेयी इससे पूर्व भी स्वयं के स्तर पर हिन्दी का व्याकरण लिख चुके थे। उन्होंने हिन्दी व्याकरण लिखते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा कि कोई असमानक रूप को न स्वीकार किया जाये।

उन्होंने अपने से पूर्व लिखें गये कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण में ही कुछ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्वपूर्ण संशोधन किये। उन्होंने गुरु के व्याकरण में उपस्थित लोक प्रचलित अमानक रूपों को नये सिरे से सम्मिलित किया तथा ब्रजभाषा के प्रभाव के कारण उपस्थित अमानक रूपों को समाप्त किया।

श्री गुरु के व्याकरण में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव उन्होंने वाच्य के स्तर पर किया। वाच्य के प्रयोग संबंधी नये नियम निर्धारित करते हुये उन्होंने कामताप्रसाद की आलोचना भी की है।

इस प्रकार किशोरीदास वाजपेयी ने हिन्दी के मानकीकरण को पूर्वतः वैज्ञानिक ढंग से अंजाम देकर इसकी वैज्ञानिकता को सुदृढ़ किया।

यह इन्हीं का योगदान है कि हिन्दी वर्तमान में व्याकरण के स्तर लगभग पूर्णतः मानक रूप प्रदान कर चुकी है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी की वचन-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में वचन व्यवस्था संस्कृत ~~तथा~~ ~~अंग्रेजी~~ से भिन्न है क्योंकि इसमें केवल दो ही लिंग स्वीकार किये गये है जबकि ~~अन्य में~~ ~~क्रमशः तीन तथा चार वचन~~ संस्कृत में तीन वचन स्वीकार किये गये है।

वस्तुतः संस्कृत से हिन्दी के निर्माण प्रक्रिया में अपभ्रंश में ही द्विवचन के शब्दों को बहुवचन मानकर द्विवचन का लोप कर दिया गया था।

हिन्दी की वचन व्यवस्था -

① वचन परिवर्तन : एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए अकारान्त तथा आकारान्त ~~शब्द~~ पुल्लिंग शब्दों में 'ए' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - लड़का - लड़के

तथा कुछ संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए उनसे पूर्व संख्यावाची विशेषण का प्रयोग किया जाता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - राजा > दो दर्जन राजा

स्त्रीलिंग में वचन परिवर्तन करने के लिए 'ईकारान्त' शब्दो में 'इयाँ' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - नदी > नदियाँ

लड़की > लड़कियाँ

जबकि 'आकारान्त' स्त्रीलिंग शब्दों को एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन करने के लिए 'एँ' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - छात्रा > छात्राएँ

बालिका > बालिकाएँ

(2) वचन व्यवस्था में दोष - हिन्दी की वचन व्यवस्था में कुछ दोष भी विद्यमान है। जो निम्न प्रकार है -

- पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी की बोलियों में सर्वनाम के रूप में क्रमश 'तुम' तथा 'तू' का प्रयोग



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एकवचन के लिए तथा 'तुम लोग' तथा 'तुम' का प्रयोग बहुवचन के लिए किया जाता है। जो असमानता पैदा करता है।

- दक्खिनी हिन्दी में स्त्रीलिंग में वचन परिवर्तन के समय क्रिया में भी परिवर्तन होता है जबकि मानक हिन्दी में नहीं।

जैसे - लड़की जाती है। (मानक)

जातियाँ हुइयाँ लड़कियाँ (दक्खिनी हिन्दी)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद खड़ी बोली के विकास की सर्वोच्च अवस्था है क्योंकि इसमें न केवल इसने पूर्ण काव्यात्मकता प्राप्त की बल्कि नवीन शब्दों (स्वर्णिम आदि) तथा नवीन अलंकारों को भी सृजित किया।

छायावाद के नवीन अलंकार - छायावाद में तीन नए अलंकारों का सृजन हुआ।

(1) मानवीकरण अलंकार - चूंकि शुक्ल जी पूर्व में ही सम्पूर्ण चराचर जगत को कविता को विषयवस्तु बनाने का आह्वान कर चुके थे। अतः छायावादी कवियों ने उसी प्रकृति को मानव रूप में प्रकट किया।

" मेघमय आसमान से उतर रही,
संध्या सुन्दर परी सी
धीरे धीरे धीरे।"

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" देखो बन्धूषर, सामने स्थिर भूधर,
पार्वती कल्पना है इसकी।"

② <u>ध्वन्यात्मक अलंकार</u> :- छायावाद की विशेषता है कि ध्वनियों के चमत्कार के माध्यम से कविता को सौंदर्य प्रदान करना। जैसे -

"झर-झर-झर-निर्झर गिरी सर से।"

③ <u>विशेषण-विपर्यय</u> :- यह अलंकार छायावाद की प्रमुख देन है। ~~विशेषणों को ही विशेष्य की भाँति~~


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंत द्वारा लिखी गई पल्लव की भूमिका का उतना ही महत्व है जितना विलियम वर्ड्सवर्थ ने पश्चिमी साहित्य में है।

वस्तुतः विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा जिस प्रकार पश्चिम में रोमांटिसिज्म की शुरुआत की थी उसी प्रकार पंत की 'पल्लव' की भूमिका को छायावादी घोषणा पत्र माना जाता है।

पल्लव की भूमिका की विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

- कविता की भाषा के रूप में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग।
- कविता में अलंकार, उक्ति वैचित्र्य, पर्यायवाची शब्दों आदि का उपयोग।
- खड़ी बोली के नवीन शब्दों तथा नवीन रूपों का प्रयोग बढ़ाना ताकि खड़ी बोली कविता

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की भाषा के रूप में स्थापित हो सके।
प्रकृति यूँ तो द्विवेदी युगी युग में ही कविता का विषय बन गई थी किन्तु पंत ने पल्लव की भूमिका में प्रकृति को कविता के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया।

यह पल्लव की भूमिका का ही महत्व है कि छायावादी प्रकृति केवल अनुभाव तक सीमित न रह कर मानवीकरण तथा नारी से भी अधिक सुन्दर हो गई। द्रष्टव्य है -

" मेघमय आसमान से उतर रही,
संध्या सुन्दर परी सी,
धीरे - धीरे - धीरे।" (मानवीकरण)

'छोड़ द्रुमों की शीतल छाया, प्रकृति से तोड़ माया
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन।
(नारी से अधिक सौन्दर्य)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अज्ञेय की काव्यानुभूति का स्वरूप

अज्ञेय हिन्दी साहित्य में उपन्यासकार, निबंधकार के साथ कवि के रूप में भी प्रतिष्ठित है।

काव्यानुभूति के संदर्भ में उनका मानना था कि काव्य का उद्देश्य अपने समय की समस्याओं को खोजना होना चाहिए। 'असाध्य वीणा' के माध्यम से वे तत्कालीन नरमानव को सृजन के माध्यम से सार्थकता प्रदान करते है।

काव्य के स्वरूप के संदर्भ में उनका मत था कि काव्य की अनुभूति सबके लिए भिन्न भिन्न हो सकती हैं। जैसे 'असाध्य वीणा' में राजा, रानी तथा प्रजा सभी ने भिन्न-भिन्न अनुभव को ग्रहण किया।

"डूब गये सब एक साथ,
एकाकी सब पार तिरे।"

अज्ञेय की काव्यानुभूति का विशिष्ट


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पक्ष यह है कि वे काव्य की को अर्थात् सृजन को सृजक से अधिक महत्व देते है और इसी के कारण असाध्य वीणा को साधने वाला प्रियंवद स्वयं को वीणा को समर्पित करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

निराला एक प्रयोगशील कवि रहे है, जो अपनी कविताओं में पौराणिकता रखते हुये भी वर्तमान समस्याओं का अंकन करते है।

जिस प्रकार 'राम की शक्तिपूजा' में वे राम को मानव रूप में स्वीकार करते है तथा नारी मुक्ति की घोषणा करते है। उसी प्रकार वे 'तुलसीदास' में लोकप्रचलित कथा को अपनी कविता का हिस्सा बनाते है।

'तुलसीदास' में उन्होंने उस कथा को चुना है, जिसके अनुसार तुलसीदास अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करते है तथा उसको ढूंढते हुये वे उसके घर तक पहुंच जाते है।

इसी प्रकार का गर्हस्थिक प्रेम 'राम की शक्तिपूजा' में भी है, जहाँ राम सीता की मुक्ति के लिए सुदूर दक्षिण में चले जाते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु 'राम की शक्तिपूजा' के विपरीत ~~में~~ 'तुलसीदास' में अपनी पत्नी के कटु वचनों को सुनकर तुलसीदास बेहद विचलित होते हैं।

इस प्रकार 'तुलसीदास के पौराणिक आख्यान में निराला ने आधुनिक जीवन की समस्याओं को उजागर किया है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या छायावाद तद्युगीन राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है? सप्रमाण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

छायावाद की कई कविताओं को लेकर यह आरोप लगता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन के सघनतम समय से संबंधित होकर भी यह उससे दूर ही रहा।

वस्तुतः छायावाद की कविताओं जैसे- 'ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे।' तथा 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' जैसी कविताओं के संदर्भ में कहा जाता है कि ये कवि स्वतंत्रता आन्दोलन को देखने में असफल रहे है।

किन्तु कुछ कविताओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाल लेना छायावादी कविताओं के अपूर्ण ज्ञान का संकेत करती है।

वस्तुतः यह ठीक है कि छायावादी कवि कुछ कविताओं में समाज की बंधनाओं के कारण पृथमथ प्रतीत होते है कि वास्तव में वे स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

डॉ नामवर सिंह के अनुसार छायावादी कवि स्वतंत्रता आन्दोलन से गहराई से जुड़े है उनकी घटनाओं का रोजनामचा लिखने से बचे है।

जिस प्रकार प्रेमचन्द जैसे कहानीकार स्वतंत्रता आन्दोलन की घटनाओं को न सम्मिलित करते हुये इसके वर्गीय चरित्र को उजागर करते है तथा राजनीतिक के साथ सामाजिक स्वतंत्रता की मांग करते है।

उसी प्रकार छायावादी कवि भी स्वतंत्रता को राजनीतिक मांग की बजाय एक मूल्य के रूप में स्वीकार करते है। इनके काव्य में 'जागो फिर एक बार' 'बीती विभावरी जाग री' जैसे पंक्तियों से स्पष्ट है कि वे जनता को जागृत करने का प्रयास करते है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में उनकी भूमिका को उनके द्वारा प्राचीन भारतीय गौरव को प्रकट करने में भी देखा जा सकता है, जिसके


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

माध्यम से उन्होंने हीनता ग्रंथि को हटाया।

" ~~[illegible]~~ "अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।"

उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को प्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते हुये ओजपूर्ण कविताओं की रचना भी की है, जो तत्कालीन जनमानस में जोश का संचार करती थी।

" हिमाद्री तुंग शृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
~~[illegible]~~ स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।"

वे तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन की गतिविधियों से भी स्वयं को जोड़ते है तथा गतिविधियों की असफलता पर नायकों को नवीन मार्ग अपनाने की सलाह भी देते हैं।

" शक्ति की करो मौलिक कल्पना।"


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

इतना ही नहीं छायावादी कवियों की स्वतंत्रता की भावना केवल राष्ट्रीय स्तर तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह वैश्विक समुदाय को सम्मिलित करती है।

"औरों को हंसते देखो मनु,
हंसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सबको सुखी बनाओ।"

सारांशतः कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य पलायन का नहीं बल्कि राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी यात्रा-साहित्य के विकास में राहुल-सांकृत्यायन के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी साहित्य की आधुनिक विधाओं में ~~साहित्य~~ ~~का~~ यात्रा साहित्य प्रमुख है। किसी यात्रा के वर्णन से संबंधित रचना जिसमें यात्रा के वृत्तांत, सामाजिक, आर्थिक जीवन, प्राकृतिक सौंदर्य आदि को सम्मिलित करना यात्रा साहित्य के अन्तर्गत आता है।

हिन्दी के यात्रा साहित्य के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान राहुल सांकृत्यायन का है। उन्होंने तिब्बत की यात्रा, तिब्बत में एक वर्ष, लंका, ईरान, रूस में पच्चीस मास, किन्नरों के देश में, यूरोप की यात्रा जैसे कई यात्रा ~~के~~ वृत्तांत हिन्दी साहित्य को दिये।

वर्तमान में जब सम्पूर्ण विश्व इंटरनेट से जुड़ गया है तथा सूचनाएँ अंगुलियों पर उपलब्ध है ऐसे में यह जानना विचित्र होगा कि सांकृत्यायन जी ज्ञान की खोज में


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

कहीं भी चले जाते थे।

उन्होंने घुम्मकड़ी को अपना धर्म तथा वृत्ति बना लिया था। वे कहते हैं कि- "ए घुम्मकड़ो कमर कस लो, दुनिया तुम्हारे स्वागत के लिए तैयार है।"

उन्होंने अपनी अनुभव की विशदता, ज्ञान की ~~गहराई~~ विस्तृता, संवेदना की गहराई तथा भाषाओं पर पकड़ के माध्यम से अपने यात्रा वृत्तांतों को सजीव रच दिया है।

अपने वर्णन के क्रम में वे उसमें रम जाते हैं तथा पाठक को पूर्णतः उस क्षेत्र की सैर करा देते हैं। उस क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों से परिचित कराते हुये वे वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य में पाठक को रमा देते हैं।

उन्होंने घुम्मकड़ी को रास्ते में एक नाव की भाँति उपयोग किया कभी बोझ नहीं


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

जनने दिया शायद इसीलिए उनके यात्रा वृत्तांतों का आज हिन्दी साहित्य में कोई सानी नहीं है। उनके ~~घुम~~ घुमक्कड़ जीवन का प्रेरणा स्रोत था -

सैर कर ले गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगानी गर रही भी तो, नौजवानी फिर कहाँ।।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राहुल सांकृत्यायन हिन्दी साहित्य के शिखर यात्रा वृत्तांतकार है जिन्होंने अपने वर्णन सजीव रूप में प्रस्तुत किये।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

हिन्दी साहित्य में छायावाद की समाप्ति के पश्चात् 1936 से 1943 तक प्रगतिवादी तथा 1943 से 1951 तक प्रयोगवादी काव्यधाराओं का विकास हुआ।

प्रगतिवादी काव्यधारा के केन्द्र में जहाँ मजदूर तथा किसान है जबकि प्रयोगवादी काव्यधारा में एक सृजक मनुष्य को महत्व दिया है। जो कोई भी हो सकता है।

साधारणतः कहा जाता है कि प्रगतिवाद ~~के~~ मार्क्सवाद से प्रभावित है जबकि प्रयोगवाद पश्चिमी विचारधाराओं ~~से~~ जैसे- अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि।

किन्तु गौर से देखने पर स्पष्ट होता है कि तत्कालीन भारत की परिस्थितियां ही दोनों के विकास के लिए जिम्मेदार थी। छायावादी कवियों ने जब वास्तविक यथार्थ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को देखना प्रारंभ किया तब प्रगतिवाद का विकास हुआ। जैसे निराला लिखते हैं-

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
है विप्लव के वीर।

यहीं निराला 1943 में तारसप्तक के प्रकाशन द्वारा प्रयोगवाद के आरंभ की घोषणा करते हैं। वस्तुतः ये ~~प्रयोगवादी~~ प्रयोगवादी किसी यांत्रिकता में नहीं बंधना चाहते थे। अतः प्रगतिशील होकर भी प्रगतिवाद से जुड़ने से बचे।

एक ओर प्रगतिवाद जहाँ केवल मार्क्सवादी क्रांति चेतना से जुड़ाव रखना चाहता है। वहीं ~~प्रयोगवादी~~ जैसे -

"लाल रूस है ढाल साथियो ~~सब~~
सब मजदूर किसानों की।
लाल रूस का दुश्मन साथी
दुश्मन सब इंसानों का।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वही दूसरी ओर प्रयोगवादी कवि अनुभव की यथार्थता पर बल देते है। वे केवल गेहूँ को या गुलाब को सुनने की बजाय नवीन प्रयोगों के माध्यम से सत्यों की खोज करते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp


Copyright – Drishti The Vision Foundation